3193

साहित्यिक पत्रकारिता और अमर उजाला (1990–2000)

सार

पत्रकारिता जहॉ लोकमत के निर्माण और उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम होती है, वहीं साहित्यिक पत्रकारिता लोक रंजन, लोक शिक्षण और जनरूचि के परिष्कार का प्रयास करती है, इसीलिए उसका स्वरूप वैचारिक, संवेदनात्मक और मनोरंजनपरक होता है। भाषा का जन्म, ज्ञान प्राप्ति की उत्कण्ठा, चिन्तन और अभिव्यक्ति की आकांक्षा से हुआ। पत्रकारिता ने उसे जन स्वर देकर सर्वसुलभ बनाया। पत्रकार साहित्यकार की ही तरह हर व्यक्ति के स्वर की गहराई, उसके अर्न्तद्वन्द्व उसकी सकारात्मक एवं नकारात्मक शक्तियों को समझनें में समर्थ होता है। अपनी कल्पनाशीलता भावप्रवणता विवेक बुद्वि तर्क तथा विश्लेषण क्षमता के कारण पत्रकार और साहित्यकार दूरबीन का काम करते है। भावुकता साहित्यकार का अपना गुण होता है, किन्तु पत्रकार तात्कालिक प्रभाव को परखता है और सम्भावनाओं को सूचित करता है। स्व0डोरीलाल अग्रवाल एवं स्व0 मुरारीलाल माहेश्वरी ने सन 1948 में अमर उजाला का प्रकाशन प्रारम्भ किया मेरठ से 12 दिसम्बर 1986 से प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। यह एक क्षेत्रीय अखबार था, प्रारम्भ में इसकी गम्भीर साहित्यिक वर्ग में कोई पैंठ नहीं थी, परन्तु साहित्यिक त्रिवेणी बन चुकी दिल्ली से नाता जोडने पर अमर उजाला में गम्भीर साहित्यिक लेख प्रकाशित होने लगें। इसके अलावा साहित्य की विभिन्न विधाओं पर गम्भीर आलोचनाएँ जो इसकें रविवासरीय संस्करण के साथ–साथ सम्पादकीय पृष्ठ पर भी आने लगी और अमर उजाला में साहित्यिक रिपोर्टिंग साहित्यिक आयोजनों के साथ–साथ कवि सम्मेलन, मुशायरा, साहित्यकारों के साक्षात्कार एवं विभिन्न विधाओं क लेखों ने अपना स्थान बनाया। अमर उजाला एक क्षेत्रीय अखबार होने के पश्चात भी गम्भीर साहित्यिक वर्ग में पैंठ बनाने में सफल रहा। साहित्यिक पत्रकारिता और अमर उजाला (1990–2000 विषय पर अध्ययन हेतु मेरठ संस्करण परिक्षेत्र को चुना गया, शोध के लिए समाजशास्त्रीय विश्लेश्णात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया, उददे्श्य परक गम्भीर पाठक वर्ग से 100 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिया गया सम्पादक श्री अतुल माहेश्वरी जी, तत्कालीन सम्पादक मेरठ संस्करण श्री शशि शेखर जी साहित्यकार श्री ब्रजेश कुमार सरस का अमर उजाला की साहित्यिक पत्रकारिता के सन्दर्भ में साक्षात्कार लिया गया।

अमर उजाला की स्थापना, विकास अद्यतन स्थिति के साथ पत्रकारिता एवं साहित्यिक पत्रकारिता का विश्लेषण का भी अध्ययन किया गया। अमर उजाला ने साहित्य के सभी पहलुओं को जन–जन तक पहुॅचाकर जागरण व नव निर्माण के प्रति चिन्तन हेतु प्रस्तुत किया। अमर उजाला में सम्पादकीय दृष्टि अखबार की मेरूदण्ड बनकर उभरी। सामायिक लेखों में स्वतन्त्र पत्रकार विशेषज्ञों ने विषय की गम्भीरता एवं तथ्यपरक ज्ञान वर्धन लेंखों से विषय कों प्रस्तुत किया।

अमर उजाला के माध्यम से बहने वाली साहित्यिक गंगा में सभी साहित्यिक पाठक गोते लगाने लगें। अमर उजाला नें साहित्यकार दुष्यन्त कुमार, प्रेमचन्द, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आदि पर विशेष लेखों को प्रकाशित किया एवं साहित्यिक पाठक एवं बच्चों को सामाजिक चेतना से जोडने का प्रयास किया, संवाद, परिचर्चा, साक्षात्कार पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक समाचार, साहित्यिक अवलोकन आदि को प्रकाशित किया।

अमर उजाला नें साहित्यिक पत्रकारिता को पूर्णतः जनहित के लिए सामाजिक चेतना के विकास हेतु जोड दिया। समय प्रवाह में धीरे–धीरे बालक एवं महिलाओं के लिए भी विशेष पृष्ठ प्रकाशित किए। अमर उजाला का यह दशक साहित्यिक पत्रकारिता प्रकाशन का स्वर्ण युग हैं।

अमर उजाला ने साहित्यिक पाठकों के लिए रविवासरीय पृष्ठ कों आरम्भ किया जिसमें उच्च साहित्यकार एवं नव साहित्यकारों की रचनाओं को प्रकाशित किया गया। साहित्यिक संस्करण में आम पाठक भी रूचि ले सकें, इसके लिए प्रयास किया गया। अमर उजाला ने अपने पाठक वर्ग का ध्यान रखते हुए कहानी, कविता, उपन्यास, हास्य, व्यंग्य, आलोचना, जीवनी, संस्मरण साक्षात्कार, संवाद आदि विधाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया।

अमर उजाला का पाठक वर्ग का बडा वर्ग ग्रामीण क्षेत्र से आता हैं। जिनकी भाषा साहित्यिक नहीं है। अमर उजाला ने जन भाषा, साहित्यिक भाषा, मिश्रित भाषा के बीच समन्वय स्थापित कर अपने पाठक वर्ग को साहित्यिक पृष्ठ उपलब्ध कराया। प्रस्तुत शोध अमर उजाला की साहित्यिक पत्रकारिता से छात्रों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं नव साहित्यकारों कों भविष्य में साहित्य के प्रति रूचि, जिज्ञासा, एवं समझ विकसित करनें में मार्ग दर्शन का कार्य करेगा।

शोध निर्देशक–

डॉ0 जगदीशदत्त शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)
डी0ए0वी0 कालिज, मुजफ्फरनगर

शोधार्थी
रविकान्त सरल